पुराण की दृष्टि में प्रथम अध्याय

भगवान् शिव से पार्वती जी ने कहा : भगवन्! आप सब तत्त्वों के ज्ञाता हैं। आपकी कृपा से मुझे भगवान् विष्णु जो समस्त लोकों का उद्धार करने वाले हैं के सम्बन्ध में नाना प्रकार के वृत्तान्त सुनने को मिले। देवेश! अब मैं गीता का माहात्म्य सुनना चाहती हूँ, जिसका श्रवण करने से श्रीहरि में भक्ति बढ़ जाती है।

श्रीमहादेवजी बोले : जिन श्रीविष्णु का श्रीविग्रह अलसी के फूल की भांति श्यामवर्ण का है, पक्षिराज गरुड़ ही जिनके वाहन हैं, जो अपनी महिमा से कभी च्युत नहीं होते तथा शेषनाग की शय्या पर शयन करते हैं, उनकी उपासना करते हुए मैं जो कथा कह रहा हूँ, तुम उसका श्रवण करो।

एक समय की बात है, मुर दैत्य के नाशक भगवान् विष्णु शेषनाग के रमणीय आसन पर सुखपूर्वक विराजमान थे। उस समय समस्त लोकों को आनन्द देनेवाली भगवती लक्ष्मी ने आदरपूर्वक प्रश्न किया- भगवन्! आप सम्पूर्ण जगत का पालन करते हुए भी अपने ऐश्वर्य के प्रति उदासीन से होकर जो इस क्षीरसागर में नींद ले रहे हैं, इसका क्या कारण है?

श्रीभगवान् बोले : सुमुखि! मैं नींद नहीं ले रहा हूँ, अपितु तत्त्व का अनुसरण करने वाली अन्तर्दृष्टि के द्वारा अपने ही माहेश्वर तेज का साक्षात्कार कर रहा हूँ। यह वही तेज है, जिसका योगी पुरुष कुशाग्रबुद्धि के द्वारा अपने अन्तःकरण में दर्शन करते हैं तथा जिसे मीमांसक विद्वान वेदों का सार-तत्त्व निश्चित करते हैं, वह माहेश्वर तेज एक, अजर, प्रकाशस्वरूप, आत्मरूप, रोग-शोक से रहित, अखण्ड आनन्द का पुंज, निष्पन्द तथा द्वैत रहित है। इस जगत का जीवन उसी के अधीन है। मैं उसी का अनुभव करता रहता हूँ। देवेश्वरी! यही कारण है कि मैं तुम्हें नींद लेता सा प्रतीत हो रहा हूँ।

श्रीलक्ष्मी जी ने तब कहा : हृषीकेश! आप ही योगी पुरुषों के ध्येय हैं। आपके अतिरिक्त भी कोई ध्यान करने योग्य तत्त्व है, यह जानकर मुझे बड़ा कौतूहल हो रहा है। इस चराचर जगत की सृष्टि और संहार करने वाले स्वयं आप ही हैं। आप

सर्वसमर्थ हैं। इस प्रकार की स्थिति में होकर भी यदि आप उस परमतत्त्व से भिन्न हैं तो मुझे उसका बोध कराइये।

श्री भगवान् बोले : प्रिये! आत्मा का स्वरूप द्वैत और अद्वैत से पृथक् भाव और अभाव से मुक्त तथा आदि और अन्त से रहित है। वह शुद्ध ज्ञान के प्रकाश से उपलब्ध होने वाला तथा परमानन्दस्वरूप होने के कारण एक मात्र सुन्दर है। वही मेरा ईश्वरीय रूप है। आत्मा का एकत्व ही सबके द्वारा जानने योग्य है। गीता शास्त्र में इसी का प्रतिपादन हुआ है। अमित तेजस्वी भगवान् विष्णु के ये वचन सुनकर लक्ष्मी जी ने शंका उपस्थित करते हुए कहा : भगवन्! यदि आपका स्वरूप स्वयं परमानन्दमय और मन-वाणी की पहुँच के बाहर है तो गीता कैसे उसका बोध कराती है? मेरे इस संदेह का आप निवारण कीजिए।

श्री भगवान् बोले : देवि! सुनो, मैं गीता में अपनी स्थिति का वर्णन करता हूँ। क्रमशः पाँच अध्यायों को तुम पाँच मुख जानो, दस अध्यायों को दस भुजाएँ समझो तथा एक अध्याय को उदर और दो अध्यायों को दोनों चरणकमल जानो। इस प्रकार इसे अठारह अध्यायों की वाङ्मयी ईश्वरीय मूर्ति ही समझना चाहिए। यह ज्ञान मात्र से ही महान पातकों का नाश करने वाली है। जो उत्तम बुद्धिवाला पुरुष गीता के एक या आधे अध्याय का अथवा एक, आधे या चौथाई श्लोक का भी प्रतिदिन अभ्यास करता है, वह सुशर्मा के समान मुक्त हो जाता है।

श्री लक्ष्मी जी ने तब पूछा : देव! सुशर्मा कौन था? किस वर्ण का था और किस कारण से उसकी मुक्ति हुई?

श्री भगवान् ने समाधान कियाः प्रिये ! सुशर्मा बड़ी खोटी बुद्धि का मनुष्य तथा पापियों का शिरोमणि था। उसका जन्म वैदिक ज्ञान से शून्य एवं क्रूरतापूर्ण कर्म करने वाले ब्राह्मणों के कुल में हुआ था। वह ध्यान, जप, होम तथा अतिथि का सत्कार, कुछ भी नहीं करता था तथा लम्पट होने के कारण सदा विषयों के सेवन में ही आसक्त रहता था। हल जोतकर और पत्ते बेचकर जीविका चलाता था। मदिरा पीने के व्यसन के साथ ही वह मांसाहार भी करता था। इस प्रकार उसने अपने जीवन का दीर्घकाल व्यतीत कर

दिया। एक दिन मूढ़बुद्धि सुशर्मा पत्ते लाने के लिए किसी ऋषि की वाटिका में घूम रहा था। इसी बीच में कालरूपधारी काले साँप ने उसे डस लिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। तदनन्तर वह अनेक नरकों में जा वहाँ की यातनाएँ भोगकर मृत्युलोक में लौटकर वहाँ बोझ ढोने वाला बैल हुआ। उस समय किसी पंगु ने अपने जीवन को आराम से व्यतीत करने के लिए उसे खरीद लिया। बैल ने अपनी पीठ पर पंगु का भार ढोते हुए बड़े कष्ट से सात-आठ वर्ष बिताए। एक दिन पंगु ने किसी ऊँचे स्थान पर बहुत देर तक बड़ी तेजी से उस बैल को घुमाया, इससे वह थककर बड़े वेग से पृथ्वी पर गिरा और मूर्च्छित होकर अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस समय वहाँ कुतूहलवश आकृष्ट हो बहुत से लोग एकत्र हो गए। उस जनसमुदाय में से किसी पुण्यात्मा व्यक्ति ने उस बैल का कल्याण करने के लिए अपना पुण्य दान किया। तत्पश्चात् कुछ दूसरे लोगों ने भी अपने-अपने पुण्यों को याद करके उन्हें उसके लिए दान किया। उस भीड़ में एक वेश्या भी खड़ी थी। उसे अपने पुण्य का पता नहीं था, तो भी उसने लोगों की देखा-देखी उस बैल के लिए अपनी समझ अनुसार पुण्य दान कर दिया।

तदनन्तर यमराज के दूत उस मरे हुए प्राणी को पहले यमपुरी ले गए। वहाँ यह विचारकर कि यह वेश्या के दिए हुए पुण्य से पुण्यवान हो गया है, उसे छोड़ दिया गया। फिर वह भूलोक में आकर उत्तम कुल और शील वाले ब्राह्मणों के घर में उत्पन्न हुआ। नये जन्म में भी उसे अपने पूर्वजन्म की बातों का स्मरण बना हुआ था। बहुत समय पश्चात् अपने कल्याण-तत्त्व का जिज्ञासु होकर वह उस वेश्या के पास गया और उसके दान की बात बतलाते हुए उसने पूछा : तुमने कौन-सा पुण्य दान किया था? वेश्या ने उत्तर दिया : **'वह पिंजरे में बैठा हुआ तोता प्रतिदिन कुछ पढ़ता है। उससे मेरा अन्तःकरण पवित्र हो गया है। उसी का पुण्य मैंने तुम्हारे लिए दान किया था।'** इसके बाद उन दोनों ने तोते से पूछा। तब उस तोते ने अपने पूर्वजन्म का स्मरण करके प्राचीन इतिहास कहना आरम्भ किया।

शुक बोला- पूर्वजन्म में मैं विद्वान् होकर भी विद्वत्ता के अभिमान से मोहित रहता था, मेरा राग-द्वेष इतना बढ़ गया था कि मैं गुणवान विद्वानों के प्रति भी ईर्ष्याभाव

रखने लगा तथा सद्गुरु निन्दक भी बन गया। समयानुसार मृत्यु को प्राप्त होकर अनेक घृणित लोकों में भटकते हुए इस लोक में आया और सद्गुरु निन्दक होने के कारण तोते की योनि में मेरा जन्म हुआ। पापी होने के कारण छोटी अवस्था में ही मेरा माता-पिता से वियोग हो गया। एक दिन मैं ग्रीष्म ऋतु में तपते हुए मार्ग पर पड़ा था कि वहाँ से गुजरने वाले कुछ श्रेष्ठ मुनि मुझे उठा लाए और अपने आश्रम के भीतर एक पिंजरे में मुझे रख लिया। वहीं मुझे पढ़ाया गया। ऋषियों के बालक बड़े आदर के साथ गीता के प्रथम अध्याय की आवृत्ति करते थे, जिसे सुनकर मैं भी बारंबार पाठ करने लगा। इसी बीच एक चोरी करने वाले बहेलिए ने मुझे वहाँ से चुरा लिया, जिससे इस देवी ने मुझे खरीद लिया। यही मेरा वृत्तान्त है। प्रथम अध्याय की आवृत्ति से मेरे पाप दूर हुए हैं, फिर उसीसे इस वेश्या का भी अन्तःकरण शुद्ध हुआ है और उसी के पुण्य से ये द्विजश्रेष्ठ सुशर्मा भी पापमुक्त हुए हैं। इस प्रकार भगवान् विष्णु ने लक्ष्मी जी की सभी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

भगवान् शिव ने अंत में कहा- देवि पार्वती! गीता के प्रथम अध्याय के माहात्म्य की प्रशंसा और परस्पर वार्तालाप करके ब्राह्मण सुशर्मा, वेश्या तथा शुक तीनों निरन्तर अपने-अपने स्थान पर गीता का अभ्यास करते रहे और ज्ञान प्राप्त करके मुक्त हो गए। इसलिए जो गीता के प्रथम अध्याय को पढ़ता, सुनता तथा इसका अभ्यास करता है, उसे इस भव सागर को पार करने में कोई कठिनाई नहीं होती है।[1]

1. पद्म पुराण, उत्तरखण्ड, अध्याय- 175